

विश्व काष्ठ दिवस के मौके पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

संवाददाता

देहरादून। काष्ठ शरीर शाखा वन वनस्पति विज्ञान प्रभाग वन अनुसंधान संस्थान द्वारा विश्व काष्ठ दिवस एवं विश्व वानिकी दिवस के उपलक्ष में आजादी के अमृत महोत्सव मनावे हेतु एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। निरसकर शीर्षक 'भविष्य की स्थिरता के लिए लकड़ी विज्ञान में प्रगति' था। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अरुण सिंह रावत, महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद ने भारतीय जैव विविधता अनुसन्धान को बढ़ावा देने और प्राकृतिक संसाधन स्थिरता में काष्ठ विज्ञान की भूमिका पर जोर दिया।

कार्यक्रम को आयोजन सचिव डॉ संगीता गुप्ता ने भारत में काष्ठ विज्ञान शिक्षा और शोध के बारे में बताया। इस संगोष्ठी में 5 महाद्वीपों के दस विश्वविद्यालय वैज्ञानिकों एवं शोधकर्ताओं ने अपने कार्य के बारे में बताया। कार्यक्रम में प्रशासनिक अधिकारी वैज्ञानिक तकनीकी अधिकारी और आईसीएफआई और एफआरआई के अन्य कर्मचारी भी संगोष्ठी में शामिल हुए थे और 50 से अधिक विश्वविद्यालयों और



में बताया। कार्यक्रम में प्रशासनिक अधिकारी वैज्ञानिक तकनीकी अधिकारी और आईसीएफआई और एफआरआई के अन्य कर्मचारी भी संगोष्ठी में शामिल हुए थे और 50 से अधिक विश्वविद्यालयों और

80 कॉलेजों के कुल 265 प्रतिभागियों ने संगोष्ठी में भाग लिया था।

डॉ० डेविड लॉयड न्यू जोर्लैण्ड से जुड़े और लकड़ी को शारीरिक कार्य में अपने शोध अनुभवों के बारे में बताया। डॉ० एंड्रू वॉग, मलेशिया ने उष्णकटिबंधीय जंगलकी लकड़ियों में प्राकृतिक स्थायित्व की ओर ध्यान केंद्रित किया। सुजी सु जिर्नलिंग्ग अमेरिका ने लकड़ी विज्ञान को बढ़ावा देने में अंतर्राष्ट्रीय लकड़ी संस्कृति समाज की भूमिका के बारे में बताया।

प्रो० मरियन वामफोर्ड दक्षिण अफ्रीका ने लकड़ी में छिपे छिपे जलवायु संकेतों के विकासवादी प्रतिक्रिया को केंद्रित करते हुए अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

डॉ अनुज कुमार फिलिपिन्स ने जैव सामग्री के रूप में लकड़ी के विविध अनुप्रयोगों के बारे में बताया। डॉ मैटिलड मल्ट फ्रांस ने जापान में

लकड़ी की संस्कृति और प्राकृतिक संरक्षण की स्थिरता में लकड़ी की समकालीन प्रसंगिकता पर प्रकाश डाला।

डॉ समीर महाराज आयरलैंड ने गैर, धातु और चिपकने से मुक्त इंजीनियर लकड़ी के उत्पाद और कनेक्शन सिस्टम, मरुल्लर, ब्योबेड अर्थव्यवस्था के बारे में श्रोताओं का ज्ञान वर्धन किया। डॉ विकटोरिया असेसो, अमोरेस, मिस्र ने मिश्र लकड़ी की संस्कृति और प्राकृतिक संसाधनों की स्थिरता में इसकी समकालीन प्रसंगिकता के बारे में बताया। डॉ अरुण गुप्ता, मलेशिया ने वैश्विक स्तर पर नैनो वुड कंपोजिट में दो खो प्रसंग के बारे में बताया। डॉ कृष्ण कुमार पाण्डेय भारत ने पारदर्शी वुड कंपोजिट के बारे में बताया। डॉ अनुप चंद्रा, डॉ रंजना नेगी, डॉ प्रवीण वर्मा, डॉ आशुतोष पाठक, डॉ धीरेन्द्र कुमार, उषासना, हिमानी और रौनक आयोजन समिति के सदस्य में उपस्थित रहे।

The Hawk

26-3-2022

Seminar On 'Advances In Wood Science For Natural Resources Sustainability' Organized At FRI



Dehradun (The Hawk): Forest Research of India (FRI), Dehradun, had organized an international seminar on 'Advances in wood science for natural resources sustainability' on March 25, 2022 to celebrate 75 years of India's independence (AZADI KA AMRIT MAHOTSAV) and to commemorate World Wood Day and International Day of Forest which is celebrated on March 21 globally. The event was promoted by International Wood Culture Society, USA. Mr. Arun Singh Rawat, Director General, Indian Council of Forestry Research and Education (ICFRE), was the chief guest and he emphasized on the lacuna in the Indian Biodiversity research and emphasized upon the role of wood science in natural resource sustainability. The organizing secretary, Dr. Sangeeta Gupta, told the participants about the Wood science education and research in India. Administrative officers, Scientists, technical officers, and other staff of ICFRE, FRI and FRI Deemed University had also joined the seminar and a total of 265 participants from more than 50 universities and 80 colleges both national and international had attended the seminar. Ten leading researchers from 5 continents were joined as distinguished speakers for the seminar. Dr. Lloyd Donaldson, New Zealand, focused his lecture on Molecular microscopy of wood where as Dr. Andrew H.H. Wong, Malaysia, has delivered his lecture on the natural durability of tropical woods.

Ms. Su Jingling, USA, told about the role of international wood culture society (IWCS) in promoting wood science. Prof. (Ms) Marion Bamford, South Africa, emphasizes on the evolutionary patterns of wood and past climate signals.

Dr. (Ms) Mechtild Mertz, France, told the participants about the wood culture in Japan and its contemporary relevance in natural resources sustainability. Dr. (Ms) Victoria Asensi-Amoros, Egypt, told the participants about the wood cul-

ture in Egypt and its contemporary relevance in natural resources sustainability. Three of the alumnus of FRI Deemed University viz., Dr. Anuj Kumar, Dr. Sameer Mehra and Dr. Arun Gupta were also the part of distinguished speaker panel. Dr. Anuj Kumar, Finland, told about the new dimensions of wood as a functional Bio-material for diverse applications. Dr. Sameer Mehra, Ireland, talked about the non-metallic and adhesive-free engineered wood products and connection systems for

bio-based economy. Dr. Arun Gupta, Malaysia, focuses his lecture on the advances in nano-wood composites where as Dr. K.K. Pandey, Indian Wood Science and Technology, Bangalore, India, told the participants about transparent wood composite. Dr. Anup Chandra, Dr. Ranjana Negi, Dr. Praveen Verma, Dr. Ashutosh Pathak, Dr. Dheerendra Kumar, Ms. Upasna, Ms. Himani and Mr. Ronak were present as members of organizing committee and vote of thanks was given by Mr. Dheeraj Kumar.

Notice

I, Pushpa Rajesh Khirale spouse of L/HAV Khirale Rajesh Gulabrao, resident at Village-Mazod, Po-Mazod, Tehsil-Akola, Distt-Akola, Maharashtra-444006, have changed my name from Pushpa Prakash Ambhore to Pushpa Rajesh Khirale in my husband service records.

जैव विविधता में अनुसंधान को बढ़ावा देने पर जोर



एकआरआई में आयोजित गोष्ठी में उपस्थित कर्मी।

वन अनुसंधान संस्थान में विश्व काष्ठ दिवस पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित

अलग-अलग देशों के विशेषज्ञों ने ऑनलाइन किया प्रतिभाग, अपनी बात रखी

से अपनी बात रखी। डा.अरुण गुप्ता ने वैश्विक स्तर पर नैने वुड कंसेजिट में हो रहे प्रगति के बारे में जानकारी दी। धीरज कुमार ने धनबाद प्रस्ताव जारित किया। डा.अनूप चंद्रा, डा.कृष्ण कुमार, डा.रजना नेगी, डा.प्रवीण वर्मा, डा.अशुतोष पाठक, डा.धर्मेन्द्र कुमार आदि भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

■ सहारा न्यूज व्यूरो

देहरादून।

वन अनुसंधान संस्थान में आवादी के अमृत महोत्सव व विश्व काष्ठ दिवस के अवसर पर अंतरराष्ट्रीय गोष्ठी आयोजित की गई। संस्थान के काष्ठ शरीर शाखा व कनस्मति विज्ञान प्रभाग द्वारा आयोजित गोष्ठी का विषय 'भूमिगत की विधरता के लिए लकड़ी विज्ञान में प्रगति' रखा गया।

गोष्ठी में अलग-अलग देशों के विषय विशेषज्ञों ने ऑनलाइन सिरकत करते हुए अपनी बात रखी। भारतीय खानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के प्रधानाध्यक्ष अरुण सिंह रावत ने शरीर मुख्ण अतिथि गोष्ठी में सिरकत की। इस अवसर पर उन्होंने भारतीय जैव विविधता में अनुसंधान को बढ़ावा देने और प्रकृतिक संसाधन विधरता में काष्ठ विज्ञान की भूमिका पर प्रकाश डाला।

इससे पहले कार्यक्रम की आयेजन खनिव डा.संजीव गुप्ता ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया।

उन्होंने भारत में काष्ठ विज्ञान शिक्षा के बारे में जानकारी भी दी। न्यूजीलैंड से जुड़े डा.डेविड लॉयड ने लकड़ी की शारीरिक रचना में आण्विक माइक्रोकोषों के बारे में अपनी शोध को खबरने रखते हुए विस्तार से जानकारी दी। मलेशिया के डा.एडु वंग ने उष्णकटिबंधीय जलल की लकड़ियों में प्रकृतिक स्थिरता पर प्रकाश डाला।

अमेरिका की सू गिनार्गल ने लकड़ी विज्ञान को बढ़ावा देने में अंतरराष्ट्रीय लकड़ी संस्कृति और समाज में इसकी भूमिका के बारे में जानकारी दी। यक्षिण अफ्रीका के प्रोफेसर मरियन काम्पोर्ड ने लकड़ी में छिपे विछले जलवायु संकेतों के विकासवादी प्रतिरूप को केन्द्रित करते हुए व्याख्यान दिया। फिनलैंड के डा. अनुज कुमार ने जैव खममारी के रूप में लकड़ी के विविध प्रयोगों पर प्रकाश डाला।

प्रारंभ के डा. मेनिटलंड मर्च ने प्रकृतिक संसाधनों की विधरता में लकड़ी की समकालीन प्रारंभिकता पर प्रकाश डाला। आयरलैंड के डा.समीर मेहरा ने अर्थव्यवस्था में काष्ठ के महत्व पर विस्तार

विश्व काष्ठ एवं विश्व वानिकी दिवस के उपलक्ष्य में अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

■ वन अनुसंधान संस्थान ने किया आयोजन ■ कई विशेषज्ञों ने रखे विचार

शाह टाइम्स संवाददाता देहरादून। राजधानी देहरादून काष्ठ शारीर शाखा, वन वनस्पति विज्ञान प्रभाग, वन अनुसंधान संस्थान की ओर से विश्व काष्ठ दिवस एवं विश्व वानिकी दिवस के उपलक्ष्य में आजादी के अमृत महोत्सव मनाने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसका शीर्षक 'शुभविषय की स्थिरता के लिए लकड़ी विज्ञान में प्रगति' था।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे अरुण सिंह रावत, महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद ने भारतीय जैव विविधता अनुसन्धान को बढ़ावा देने और प्राकृतिक संसाधन स्थिरता में काष्ठ विज्ञान की भूमिका पर जोर दिया। कार्यक्रम की आयोजन सचिव



डॉ० संगीता गुप्ता, ने भारत में काष्ठ विज्ञान शिक्षा और शोध के बारे में बताया। इस संगोष्ठी में 5 महाद्वीपों के दस विश्वविख्यात वैज्ञानिकों एवं शोधकर्ताओं ने अपने कार्यों के बारे में बताया। कार्यक्रम में प्रशासनिक अधिकारी, वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी, और आईसीएफआरई और एफआरआई के अन्य कर्मचारी भी संगोष्ठी में शामिल हुए थे और 50 से अधिक विश्वविद्यालयों और 80 कलेजों के कुल 265 प्रतिभागियों ने संगोष्ठी में भाग लिया था। डॉ० डेविड लॉयड, न्यू जीलैण्ड से जुड़े और, लकड़ी की शारीरिक रचना में आणविक माइक्रोस्कोपी के बारे में अपने शोध अनुभवों के बारे में

बताया। डॉ० एंड्रू वॉन्ग, मलेशिया ने उष्ण कटिबंधीय जंगलकी लकड़ियों में प्राकृतिक स्थायित्व की और ध्यान केंद्रित किया। सू जिनलिङ्ग, अमेरीका ने लकड़ी विज्ञान को बढ़ावा देने में अंतर्राष्ट्रीय लकड़ी संस्कृति समाज की भूमिका के बारे में बताया। प्रो० मरियन वामफोर्ड, दक्षिण अफ्रीका ने लकड़ी में छिपे पिछले जलवायु संकेतों के विक.। सवादी प्रतिरूप को केंद्रित करते हुए अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ० अनुज कुमार, फिनलैंड ने जैव सामग्री के रूप में लकड़ी के विविध अनुप्रयोगों के बारे में बताया। डॉ० मेंचिलड मर्ल, फ्रांस ने जापान में लकड़ी की संस्कृति और प्राकृतिक

संसाधनों की स्थिरता में लकड़ी की समकालीन प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। डॉ० समीर मेहरा, आयरलैंड ने गैर-धातु और चिपकने से मुक्त इंजी. नियर लकड़ी के उत्पाद और कनेक्शन सिस्टम-सर्कुलर-बायोबेड अर्थव्यवस्था के बारे में श्रोताओं का ज्ञान वर्धन किया। डॉ० विक्टोरिया असेंसी-अमोरोस, मिस्र, ने मिस्र में लकड़ी की संस्कृति और प्राकृतिक संसाधनों की स्थिरता में इसकी समकालीन प्रासंगिकता के बारे में बताया। डॉ० अरुण गुप्ता, मलेशिया, ने वैश्विक स्तर पर नैनो वुड कंपोजिट में हो रही प्रगति के बारे में बताया। डॉ० कृष्ण कुमार पाण्डेय, भारत, ने पारदर्शी वुड कंपोजिट के बारे में बताया।

डॉ० अनूप चंद्रा, डॉ० रंजना नेगी, डॉ० प्रवीण वर्मा, डॉ० आशुतोष पाठक, डॉ० धीरेन्द्र कुमार, उपासना, हिमानी और रौनक आयोजन समिति के सदस्य में उपस्थित रहे और समारोह में धन्यवाद प्रस्ताव धीरज कुमार ने दिया।

Uttar Bharat Live

26-3-2022

जैव विविधता अनुसन्धान को बढ़ावा देने पर जोर



उत्तर भारत लाइव ब्यूरो
uttarbharatlive.com

देहरादून। काष्ठ शारीर शाखा वन वनस्पति विज्ञान प्रभाग वन अनुसंधान संस्थान द्वारा विश्व काष्ठ दिवस एवं विश्व वानिकी दिवस के उपलक्ष में आजादी के अमृत महोत्सव मनाने हेतु एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसका शीर्षक भविष्य की स्थिरता के लिए लकड़ी विज्ञान में प्रगति था। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद के महानिदेशक अरुण सिंह रावत ने भारतीय जैव विविधता अनुसन्धान को बढ़ावा देने और प्राकृतिक संसाधन स्थिरता में काष्ठ विज्ञान की भूमिका पर जोर दिया।

विश्व काष्ठ दिवस पर
कार्यक्रम आयोजित



कार्यक्रम की आयोजन सचिव डॉ संगीता गुप्ता ने भारत में काष्ठ विज्ञान शिक्षा और शोध के बारे में बताया। इस संगोष्ठी में 5 महाद्वीपों के दस विश्वविख्यात वैज्ञानिकों एवं शोधकर्ताओं ने अपने कार्यों के बारे में बताया। कार्यक्रम में प्रशासनिक अधिकारी, वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी, और आईसीएफआरई और एफआरआई के अन्य कर्मचारी भी संगोष्ठी में शामिल हुए थे और 50 से अधिक विश्वविद्यालयों और 80 कॉलेजों के कुल 265 प्रतिभागियों

ने संगोष्ठी में भाग लिया था। डा. डेविड लॉयड, न्यूजीलैण्ड से जुड़े और, लकड़ी की शारीरिक रचना में आणविक माइक्रोस्कोपी के बारे में अपने शोध अनुभवों के बारे में बताया। डा. एंड्रॉ वॉंग, मलेशिया, ने कटिबंधीय जंगलकी लकड़ियों में प्राकृतिक स्थायित्व की और ध्यान केंद्रित किया। सुश्री सू जिनलिङ्ग अमेरिका ने लकड़ी विज्ञान को बढ़ावा देने में अंतराष्ट्रीय लकड़ी संस्कृति समाज की भूमिका के बारे में बताया। प्रो. मरियन बामफोर्ड दक्षिण अफ्रीका ने लकड़ी में छिपे पिछले जलवायु संकेतों के विकासवादी प्रतिरूप को केंद्रित करते हुए अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।